सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• शुभ्रा झा

सृजक-सृजन-समीक्षा

शुभ्रा झा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

शुभ्रा झा का परिचय

नाम:शुभ्रा झा ।
जन्मः 03/07/80
स्थान:सीकर,राजस्थान ।
शिक्षा:पोस्ट ग्रेजुएट ;बी;एड।
पति :श्री संतोष कुमार झा।
पिता:स्वर्गीय गोलोक नाथ मिश्र ।
माता:श्रीमति माधुरी मिश्रा।

आत्मकथ्य

एक शिक्षित परिवार में जन्मी मैं हमेशा से भावुक और संवेदनशील रहीं ।परिवार में डॉक्टर भाई बहन और भाभी से प्रभावित हो कर मैंने माक्रोबाईलोजी में पोस्टग्रेजुएट के बाद बी:एड किया मगर शादी के बाद परिवार की जिम्मेदारी के कारण शोध कार्य नहीं कर पायी ।अंतरा शब्द शक्ति के सम्पर्क में आने के बाद मैंने कविता लेखन की शुरुआत हुई।आज मुझे अपना रास्ता मिल चुका है आप सभी श्रेष्ठ जन के आशीर्वाद से और मार्गदर्शन से आगे बढ़ती जाऊंगी।

धन्यवाद

शुभ्रा झा

"सृजक का सृजन"

कहाँ जा रही है औरतें

आज फिर बैठेगीं
कस्बे की औरतें
आकर झुण्ड में अपने
शाम को खाने के बाद
सभी होती इकट्ठी
फिर कुछ देर बाद
गुनगुनाएगीं हंसी
और कुछ
सिसकीयाँ भी
तैर जाएंगी।
बातें कुछ पड़ोसन की या
फिर अपने घर वालों की
सभी के दर्द
एक एक कर
परोसे जाएंगे सामने
कभी मिर्ची
लगेगी किसी को
किसी को
चटपटाती चाट
सा रस मिलेगा
बड़ी खूबी से
ओढ़कर पेबंद भरी
चादर
धीरे से दूसरों को
नंगा किया जाएगा ।
वहीं कुछ दूर बड़ी इमारत में
होकर इकट्ठी औरतें
झूमती डाल के गैरों के गले
में हाथ
अपनी आधुनिकता का
ओढ़े लिबास
बड़ी ही बेपरवाह हो कर
इस दुनिया से
बोलती आदर्श भरी बातें
खुशबू से नहा कर
अपनी गंध को छुपाए
वो आज फिर कर रही हैं बातें।
चली जाएगी दोनों तरह की
औरतें
समेटे कुछ खुशियों को भर
कोई फिर पसर जाएगी
चादरों के संग बिस्तरों पर
और दूसरी पाने को अतृप्त
अभिलाषा
चुकाएगी अपनी ही काया।
दोनों ही हालातो में औरतें
ढूंढती है और जानने की कर रही
कोशिश
है आखिर किस तरफ जा रही है
वो
आज भी पिस रही है वो
या कि खुद को ही छल रही है
वो।

विद्यालय कैसे आऊँ

सुना है उस घर में
बसती है विद्या की देवी
देती है नित ज्ञान की ताकत
मिलती वहाँ हौसलों को उड़ान
मिलती वहाँ अपनी पहचान।
गई थी मैं भी वहाँ
सखी संग सहेली
थोड़ी सहमी थोड़ी डरी
थी बड़ी अकेली
मिला बहुत कुछ जानने को
देखा नयनों को फाड़।
कितना कुछ छिपा हुआ
सुंदर है यह संसार।
नई अब भाषा नई है बोली
सीखा पढ़ना लिखना
और सीखा मैंने वहाँ
लघुशंका को दबाना।
नहीं उचित उपाय वहाँ है
कोई लड़की के लायक
कैसै जाऊँ रोजाना पढ़ने
नहीं है कोई सहायक
छोड़ पढ़ाई घर भागी आती
लघुशंका के कारण
पूछे अम्मा और बाबा जब
क्या बताऊँ अब कारण।

कुछ कहते है छोटी बातें
कोई कहते मुझे नादान
झाड़ियो के पीछे जाकर
कब तक होगा समाधान।
बड़े बड़े महलों में बैठे
कहते तुम हो एक समान
भूल गए क्यों देना हमको
नारी का जो मान सम्मान।
सोच रहे बस देकर नारा
कर रहे क्या इंतजार
एक दिन छोड़ कर मैं भी
बैठूँगी जब अपने द्वार।
या फिर सहती रहूँ सदा
अपना ऐसा ही अपमान
और किसी दिन वहशी आगे
लुट जाए मेरा सम्मान।
बोलो कब तक सभांलू मैं
अपनी आबरू उन लोगों से
या फिर छोड़ दूँ आना विद्यालय
डर कर कुछ इन दागों से।
नहीं मंजूर छोड़ पढ़ाई
घर बैठ मैं जाऊँ
बोलो इन हालातों में मैं
विद्यालय कैसे आऊँ।
विद्यालय कैसे आऊँ।।।

लड़कियाँ या मछलियाँ

देखा है तुमने कभी
गाँव के पास के पोखर में
तैरती अनगिनत मछलियाँ
एक छोर से दूसरी तरफ
बस नाचती एक दायरे में
निकल जाए वहाँ से तो
मर जाएगीं वे ।
और देखा वहाँ पानी में
तैरती झुण्ड लड़कियों की
खिलखिलाती ,गुनगुनाती
एक कविता जैसी
उनमुक्त आजाद पवन सी
बदल जाती है धीरे धीरे
सारी लड़कियाँ मछलियों में
बंध के रह जाती किनारों से।
कोई समझाए उन्हें
बहुत अंतर है उनमें और
मछलियों में
मरेगीं नहीं जो कभी तोड़ बाँध
जो बाहर आए
एक नए परिवेश में
और नए हालात में
थोड़ी देर छटपटाएगीं
मगर आजादी की हवा में
सांस लेना सीख लेंगी।
सीख लेंगी अपने लिए
चलना सीख लेंगी
अपने लिए जीना ।
मगर कुछ जानने से पहले ही
फँसा कर जाल में उनको
फेंक कर एक पोखर से
दूसरे पोखर जीने को
और अगर रास्ते में
मरेगीं वो बदकिस्मत
सजेगी फिर किसी
के निवाले में।
यहाँ ऐसा तब तक
ये चक्कर चलता रहेगा
कि जब तक बनना मछलियाँ
रोकती नहीं ये
लड़कियाँ।

जिजीविषा

काँच की बोतलों में
भर लेती हूँ
आँसू अपने
जुगनू बन के
चमकते है
जब भी हताशा
छाई हैं।
हैं बड़े रंगीन
और कुछ
खुरदरे भी वो
मैंने जीवन के हरेक
पन्नों से स्याही
जो चुराई हैं।
तुम कभी जान भी
नहीं पाओगे
मेरी जीने की ललक
मैंने आँसुओं के
समंदर में भी
कश्ती चलाई हैं।
जो चिल्लाते है मुझ पे
झुण्ड परछाईयों की
मैंने अक्सर ही
उन्हें उनकी ही
शक्ल दिखाई हैं।
तुम देखते हो
जो कभी रोते मुझको
मैंने अनजाने में ही
उनमें भी हँसी छुपाई हैं।

चीकू

सखी
याद है तुम्हें
हमारा हाथों में हाथ डाले
रोज स्कूल जाना
घंटे भर की चहलकदमी
रोजाना की भागदौड़
और लौटते हुए रास्ते से
फेंकी बेकार आइसक्रीम की
नारंगी लकड़ियो को चुनना।
बालपन में बनाते थे उन
लकड़ियो से अपना घरौंदा।
उन घरौंदो को सजाना
चमकीले गोटों से
और अपने हुनर पे इतराना।
सखी
याद है तुम्हें
रास्ते में आता वो बड़ा सा
बगीचा
ढूंढते रहते थे घंटों वो पक्के चीकू
कुछ नहीं तो कच्चे ही खा कर
इतराना
माँ से गले की खराश का झूठा
बहाना।
वो भी जानती थी हमारी झूठी
लड़ाई
मगर चुपचाप छुपा लेती हमारी
लड़काई।
कच्चे चीकू के बाद गले में
अटकता पानी
माँ सब जानती थी अपनी शैतानी
सखी
गोटो किनारों से सजाए
बैठी हूँ अपना घरौंदा
बस आती नहीं आँखों में
वो पहले सी चमक
कभी यूँ ही कहीं से आ कर
दिखा दो
अपना भी घरौंदा
आओ पी ले हमदोनों
दो घूँट बचपन के
न जाने कब से अटका हैं
गले में
वो कच्चा चीकू बगीये का।

बेटी का संवाद माँ से

माँ तुमने पढ़ना सिखाया
सजना और संवरना भी
और धीरे धीरे सीखाया
मुझको जग से डरना भी।
क्यों नहीं भरी मुझमें
आग अपने उस हृदय की
रोज जिसको हो बुझाती
डाल अश्रु जल नयन की।
मैं थोड़ा जल ही जाती
और खोती मेरी भावनाएँ
रोज अब इस खोखलेपन को
किस तरह कब तक दबाए।
आज जब बाहर निकलती
इस मतलबी दुनिया मे मैं।
रोज मिलते लाखों बताने
कितनी अबला नारी हूँ मैं।
अब नहीं बर्दाश्त ये
कोई मेरा हनन करें
बोल अबला और नारी
नित मेरा शोषण करें।
आग जो थोड़ी वो होती
मैं जला कर खाक करती।
नारी को अबला कहने वाली
पोथी को मैं राख करती।
कुछ नहीं माँ धीर धरो
अब भी नहीं हुई हैं देरी ।
है सुलगती वेदना हृदय की
आग बन कर अब हमारी।
मान या अपमान का भय
अब नहीं मेरे लिए।
ठान ली है अब लड़ाई
स्वावलंबन के लिए।
माना कोमल और सुंदर
पाई है मैंने अपनी काया।
पर पहाड़ों सी दृढ़ता
भी है हृदय मे समाया।
बंद करके अपने कान
सुनना बुराई छोड़ दूँगी।
रोके मुझे उड़ने से जो
उस स्वर्ण पिंजरे को तोड़ दूँगी।
नहीं समझौता अपने मान से
जो मिलें महलों की रौनकों से।
बस खुद को एक बार निकालूँ
इस दुनिया के ढ़कोसलों से ।
क्यों ढ़केली जा रही हूँ
रोज अंध कुएँ में मैं।
घुट के रह जाती आवाजें
गूंगी पुतलों जैसी मैं।
आँखों से न बहेंगी नीर
अपने आग को बुझाने।
तोड़ दूँगी दीवारों को
अपने अस्तित्व को बचाने।
घर या बाहर दोनों जगह
आग थोड़ी तो जले।
चीरते जो चीर नारी का
रावण दुशासन वो जले।
उत्पीड़न हो मानसिक या
हो शारीरिक हमारी।
क्यों नहीं उस आग में
भस्म करें वो परछाई सारी।
भस्म करें वो परछाई सारी।

तंज

जो सम्भाले मैं रखा
स्वर्णे सा अपना हृदय
राग द्वेष भाव का
होता रहा नित उदय।
सामना कर भी लेती
औरों का व्यवहार मैं
सह न पाई अपनों के
तंज का प्रहार मैं।
आत्म मंथन से भी मैनें
पाई नहीं कोई सुधा
सह सकूँ जो प्रहार
प्राण रक्षा के लिए।
मैं कहाँ से ले के आती
तंज जो निष्फल करें
भावनाओं के समर में
रह गए हर दाँव धरे।

हो बिखर के कण हृए
हृदय के अरमान मेरे
शोक कब तक मनाऊँ
रख के ये तंज सारे।
आगे बढ़ाया पग को अपने
विश्व मयी रण के पटल पर
स्वयं की पहचान की जब
हीनता से निकल कर।
है अगर मुझमें वो पौरूष
जग मुझे पहचान लेगा
दूसरों के तंज कब तक
हित मेरा रोके रखेगा।
क्यों मैं बदलूँ स्वर्णे हृदय को
लौह या पाषाण में
भेद दे हृदय को मेरे
है धार कहाँ किसी बाण में।।।।

"सृजन की समीक्ष

1.

शुभ्रा जी, का सप्ताह की कवियत्री के रूप में स्वागत, **अभिनंदन।**
आपके अंदर एक छटपटाहट तो स्पष्ट दिखती है, जो अभिव्यक्त होने की ललक भी रखती है। यह ललक शब्दों के रूप में ढल भी रही है। बस कुछ तराशने की जरूरत है। निश्चित ही समय के साथ साथ शब्द भी पकेंगे। भावों को एक सुविन्यासित आकार देना ही तो कविता है। आप सुघड़ता से इसे कर लेंगी।
भावात्मक रूप से सभी रचनाएं अच्छी हैं।
आपको बहुत बहुत शुभकामनाएं।

सत्यप्रसन्न्

2.

शुभ्रा जी ,,,
हार्दिक स्वागत ,,,
काव्य यात्रा की तो यूँ ही शुरूआत होती है ,,,बहुत ही बेहतरीन आत्म कथन,,,,
कहाँ जा रही हैं औरते
एक बहुत ही चुभता हुआ सा प्रश्न,,,,जो हर वर्ग की औरतों को स्वयं से करना चाहिए ,।
कि क्या हमारी दशा और दिशा दोनों सही हैं,
यदि नही तो हम क्या कर रही हैं इसके लिए ,,?
विद्यालय कैसे आऊं बडा ही ज्वलंत प्रश्न ,,,आज भी गाँव में स्त्रियों के लिए कठिन समस्या,,,,और इससे जुड़ा अस्मिता का प्रश्न ,,,,सहज ही समाज और शासन को कर्तव्य बोध जगाता हुआ ।
लडकियाँ या मछलियाँ
एक और तीखा प्रश्न ,,,महिलाओं से जुडा

और सीधा सीधा बदलाव के लिए इंगित करता हुआ,,,
जिजीविषा
कही न कहीं दबावों की जिन्दगी से छूट पाने की छटपटाहट,,,
मैने आँसुओं के समंदर में भी
कश्ती चलाई है
चीकू,
बहुत ही हृदयग्राही सृजन ,,,
बचपन की वीथिकाओं में फिर से उंगली पकड़ ले जाता हुआ ,,,
आओ पी लें हम दोनों
दो घूंट बचपन के
बेटी का संवाद माँ से
एक और गले में फंसी हड्डी ,,लडकी हो कर जनमने की,।पर अब एक निश्चय भी ,,इस कारा को तोड़ भागने का,,,,
तंज
आत्म विश्वास की पहली छलाँग
कुल मिला कर शुभ्रा जी का सृजन स्त्रित्व का दर्द बयान करता है ,। शिल्प की दृष्टि से अभी और परिमार्जन की आवश्यकता है ।

साधुवाद
सुनीता लुल्ला

3.

आज की उत्सव मूर्ति आ. शुभ्रा जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। आपकी रचनाएँ नारी के आसपास की जो ज्वलंत समस्याएं है जिन्हें अधिकतर बताई नही जाती है को आप ने बड़े ही सहज व सरल शब्दों में अपनी रचनाओं के माध्यम से रखा है। माँ वास्तव में आपने बड़े सटीक प्रश्न उठाए है आपने। वहीं लड़कियों के साथ स्कूल जाने पर आने वाली समस्याओं को भी अच्छे से रखा है। आपकी सभी रचनाएँ उत्तम है।

आपकी भाषा सहज एवं सरल है। शुरुआत से अंत तक आपकी रचना पाठक को बाँधे रखती है। आपकी सभी रचनाएँ कथ्य एवं भाव पक्ष पर खरी उतरती है। आपकी कलम यूँ ही उत्तम लेखन करती रहे। इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ **हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।'**

कैलाश मंडलोई 'कदंब'
खरगोन मध्यप्रदेश

4.

शुभ्रा जी की कविताओं में गांभीर्य है। विमर्श का एक व्यापक आकाश है। बड़ा सामयिक व ज्वलंत प्रश्न
"विद्यालय कैसे जाऊँ?"
और अपनी ही माँ को उलाहना देता यह सवाल ".... और धीरे धीरे डरना सिखाया, क्यों नहीं भरी आग अपने हृदय की..."
चीकू का सहारा लेकर अल्हड़ बचपन की खराश भरी यादें।
शिल्प कहन व प्रवाह निखारने के लिए तो साहित्य साधक आजन्म प्रयास करता रहता है।कभी स्वयं कभी को कदाचित् ही संतुष्टि मिली हो। आपकी कविताओं में यह सब काव्यगत विशेषताएं परिलक्षित हो रही हैं।
बहुत बधाई व और अधिक संभावना के लिए शुभकामनाएँ।

राजेन्द्र श्रीवास्तव

5.

केंद्रीय रचनाकार के रूप में हार्दिक स्वागत आदरणीया शुभ्रा जी ।
व्यस्तता के चलते अभी आपकी रचनायें पढ़ पाया हूँ । वैसे रोजाना पटल पर आपकी रचनायें पढ़ते आएं हैं इसलिये आपकी रचनाशक्ति से परिचय तो था ही ...बस अपेक्षाएं बढ़ी हुई थी जो आज आपको पढ़ने के बाद संतुष्ट हुई ।
मध्यमवर्गीय महिलाओं और हाई प्रोफाइल महिलाओं के एकत्रित होने के और उनके बीच के संवादों के फासले बड़ी उत्कृष्टता से एक गहरा पक्ष

उकेरा आपने, एक समूह के अनगिनत मुद्दे सुख-दुख के होते हैं एक समूह को कृत्रिमता का सहारा लेना होता है । सुंदर रचना । लड़कियों और मछलियों की तुलना और भावार्थ हृदय को छू गए । जिजीविषा, तंज़, बेटी से संवाद ये रचनायें भी पसंद आयी । लाज़वाब लेखन के लिये बहुत बहुत बधाई । मेरा व्यक्तिगत विचार है की रचनाएँ ज्यादा लम्बी नहीं होना चाहिये । आपकी छोटी रचनायें भी बहुत उत्कृष्ट होती है । पुनः सुखद जीवन की शुभकामनाओं के साथ **हार्दिक बधाई ।**

हेमन्त बोर्डिया

6.

पटल के एकल पोस्ट पर शुभ्रा झा जी आपका हार्दिक अभिनन्दन । आपने अपने सही रचनात्मक कार्यों के लिये बड़ी कठिन परिस्थितियों से गुजरते हुये लेखन का रास्ता बनाया है । काबिल-ए - तारीफ है। पहली रचना **कहाँ जा रही हैं औरतें में आपने तुलनात्मक दो परिवेष की औरतों की वार्ता का उल्लेख किया है जिसमें दोनो में ही अतृप्त बातों को पर्दर्शित किया है । वास्तव में बातों का अंत नहीं है** । सुन्दर रचना । विद्यालय कैसे आऊँ किसी लड़की की विवसता का बखूबी चित्रण किया है ।लड़कियों एवं मछलियों के तुलना कर फिर से लड़कियों की परेशानियों को प्रदर्शित करती सुन्दर रचना है । आपकी सभी रचनायें विषय परक एवं किसी विषेश समस्याओं को उजागर करती हैं । **आप बहुत अच्छे काव्यकार हैं । आपकी लेखनी की में भूरी भूरी प्रशंसा करता है । मेरी असीम शुभकामनायें ।**

डॉ अनिल कुमार कोरी

6.

सर्वप्रथम केंद्रीय रचनाकार के रुप मे आपका स्वागत **अभिनंदन**। अन्तरा-शब्दशक्ति का सौभाग्य कि उसकी वजह से एक कलम पुनः चलने को

आतुर हुई । सबसे पहले **बधाई** देना चाहूंगी आपकी रचनाओं के शीर्षक के लिए, हर शीर्षक अपनी कहानी खुद कहता है सा,..

1. **कहाँ जा रही है औरतें** सशक्त सटीक रचना

2. विद्यालय कैसे आऊं?

एक जटिल समस्या जिसका निवारण आसानी से किया जा सकता है पर घर घर शौचालय की मुहिम चलाने वालों तक काश यह गुहार पहुंचती और सिर्फ पहुंचती नहीं बल्कि सुनकर दूर करने हेतु कार्य किया जाता।

3. लड़कियाँ या मछलियाँ

बचपन से मछली जल की रानी पढ़ती लड़कियों को याद दिलाने का शुक्रिया की लड़कियाँ जग की रानी है।

4. जिजीविषा

बहुत ही प्रेरक कथ्य

5. चीकू

प्यारी सी बाल कविता **दो घूँट बचपन के** उपयुक्त शीर्षक

6. बेटी का संवाद माँ से

एक आवश्यक संवाद

7. तंज ज्वलंत सवाल

बहुत अच्छी शैली, भाव, कथ्य और कथानक केवल वर्तनी की अशुद्धियां रचनाओं को कमजोर न करे इसलिए इंगित करने का साहस किया है आशा है आप अन्यथा नहीं लेंगी। टंकण की त्रुटियाँ कई बार फोन पर हो जाती है जो स्वीकार्य है पर वर्तनी दोष अधिक है तो ध्यान देना आवश्यक है। सफल सतत साहित्यिक सफ़र सुखद रहे,.....

प्रीति सुराना

7.

इस सप्ताह की उत्सव मूर्ति शुभ्रा को **बधाई एवं अनेक शुभकामनायें** ।
तुम्हारी सभी रचनायें सत्य के करीब और मन को छूती सी लगती है ।

१.कहां जा रही हैं औरतें

तथा कथित आधुनिक स्त्रियों पर करारा ब्यंग है, जो केवल कपड़े , पार्टी, खाना -पीना ,डांस करने और अंग्रेजी बोलकर ही अपने को अत्याधुनिक समझती है। आधुनिक विचारों और समस्यायों से उन्हें कोई मतलब नहीं रहता।

२.विद्यालय कैसे जाऊं

पढ़ने की सीखने की जीवन में कुछ करने की इच्छा रहते हुये भी कुछ बड़ी होते ही लड़कियां अति आवश्यक सुबिधाओं से वंचित विद्यालय जाना छोड़ देती है । उनकी समस्यायों को रेखांकित करती लाई ने।

३.लड़कियां या मछलियां

एकदम सही चित्रण, गांव के पोखर में लड़कियां मछली के तरह ही तैरती रहती है।

४.जिजीविषा

मानव-मन के अन्तर्द्वन्दों और संघर्षों की स्वीकारोक्ति।

५.चीकू

बालपन की मधुर स्मृति और वर्तमान का यथार्थ ।

६.बेटी का संवाद मां से

मर्मस्पर्सी रचना, बेटी अपनी अच्छाई,बुराई मां को तो कहेगी ही ।

७.तंज,.....सच में अपनों की कही बातें मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है- 'सामना---तंज का प्रहार मैं। 'लेकिन भले की आशा कभी छोड़नी नहीं है , इसलिये तो-'क्यों मैं बदलूं--- किसी बाण में।' यही शुभकामना है कि मां सरस्वती तुम्हारी लेखनी को गति और शुभ्रता प्रदान करें।

माधुरी मिश्रा

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com